Not to be filled by the Candidate
(अभ्यर्थी द्वारा नहीं भरा जाये)

Total Pages- 24

Time : 2 Hours समय : दो घंटे	Maximum Marks : 50 पूर्णांक : 50

महत्त्वपूर्ण निर्देश / IMPORTANT INSTRUCTIONS

1. अपेक्षित विवरण केवल "प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका" के ऊपर दिये गये फ्लेप पर ही लिखें, अन्य किसी स्थान पर नहीं।
2. "प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका" (रफ कार्य के पृष्ठ सहित) के अन्दर कहीं पर भी कोई पहचान चिन्ह यथा, रोल नम्बर, नाम, पता, मोबाईल नम्बर / टेलीफोन नम्बर, देवताओं के नाम अथवा किसी भी प्रश्न के उत्तर से असंबंधित शब्द, वाक्य एवं अंक लिखे जाने या अंकित किये जाने को अनुचित साधनों का उपयोग माना जायेगा। ऐसा पाये जाने पर अभ्यर्थी की सम्पूर्ण परीक्षा में अभ्यर्थिता रद्द कर दी जायेगी।
3. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा केन्द्र पर व्यवधान उत्पन्न करता है या वीक्षण स्टाफ के साथ दुर्व्यवहार करता है अथवा वंचनापूर्ण कार्य करता है तो वह स्वयं ही अयोग्यता के लिए उत्तरदायी होगा। वह राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 1992 के तहत दाण्डिक कार्यवाही हेतु भी उत्तरदायी माना जायेगा।
4. प्रश्नों की संख्या और उनके अंक "प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका" में अंकित किये गये हैं।
5. प्रश्नों के उत्तर "प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका" में प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान पर ही लिखें कहीं और नहीं, अन्यथा ऐसे उत्तर का मूल्यांकन परीक्षक द्वारा नहीं किया जायेगा।
6. अभ्यर्थी अपने उत्तर निर्धारित जगह से अधिक में नहीं लिखें। किसी भी परिस्थिति में पूरक उत्तर पुस्तिका नहीं दी जायेगी।
7. प्रश्न द्वारा अपेक्षित भाषा, अंग्रेजी या हिन्दी में ही उत्तर दीजिये।
8. यदि "प्रश्न पत्र–सह–उत्तर पुस्तिका" कहीं से कटी–फटी या अमुद्रित है, तो अविलंब वीक्षक के ध्यान में लाकर उसे बदलवा लें अन्यथा उसका दायित्व अभ्यर्थी का होगा।
9. परीक्षा कक्ष में किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक संयंत्र के साथ प्रवेश करना सर्वथा वर्जित है।

• • • • •

1. Write the required particulars only on the flap provided on the top of "Question Paper-cum-Answer Book"; and not at any other place.
2. Do not write any mark of identity inside the "Question Paper-cum-Answer Book" (including paper for rough work) i.e. Roll No., Name, Address, Mobile No./Telephone No., Name of God etc. or any irrelevant word other than the answer of question. Such act will be treated as unfair means. In such a case the candidature of the candidate shall be rejected for the entire examination.
3. If a candidate is found creating disturbance at the examination centre or misbehaving with Invigilating Staff or cheating will render him liable for disqualification. He shall also be liable for penal action under The Rajasthan Public Examination (Prevention of Unfair Means) Act, 1992.
4. The number of questions to be attempted and their marks are indicated in the "Question Paper-cum-Answer Book".
5. The answers of the questions should strictly be written in the space provided below question and not elsewhere, otherwise, such answer shall not be assessed by the examiner.
6. Candidates do not write the answers beyond the space prescribed. No Supplementary Answer Book shall be provided in any case.
7. Attempt answer only in the language, English or Hindi, as required by the question.
8. In case the "Question Paper-cum-Answer Book" is torn or not printed properly, bring it to the notice of Invigilator for change, at earliest otherwise the candidates will be liable for that.
9. Possession of any electronic device is strictly prohibited in the Examination Hall.

https://www.pyqonline.com

Note:-Attempt all the 05 questions. Each question carries 10 marks.

नोटः—समस्त 05 प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु 10 अंक निर्धारित हैं।

Question No. 1: **(10 Marks)**

Translate the following passage in Hindi.

नीचे दिये गए लेखांश का हिन्दी में अनुवाद कीजियेः—

"Though the Vedas were considered as the source of Dharma (law), the Smritis constituted the codified substantive civil and criminal law and procedural law of the ancient Indian legal system. But law could not remain static. Some scope was left for this purpose by the provisions of the Smritis which said that apart from the Shruti and the Smritis, the good customs and what was agreeable to men of virtuous conduct were also the sources of law. This gave scope for developing usages and customs by the people which ultimately got assimilated into the legal system and modified the earlier laws on certain topics. The later smriti writers, who were sages of great eminence like their predecessors, did modify the provisions of the earlier Smritis and made such modifications as part of the Smriti law. Instances of changes so brought about are pointed out later while dealing with the relevant topics. At some point of time the long line of Smriti writers came to an end. Thereafter the law had to grow and modify only through other works, such as commentaries and digests written by eminent jurists. This was practically the only device for the development of law. The reasons are obvious. The Smritis continued to be the basic law of the Indian legal system. The king (State) was not invested with any legislative power. Therefore the Smritis which held the sacred and authoritative position could not be amended by the State. In such a situation, owing to the compelling circumstances of changing society, jurists resorted to modifying and adopting the law through the device of interpretation. The deep knowledge of the Vedas and Dharmasastras of the commentators and the respect commanded by them in the society by their virtuous conduct and the forceful interpretation they gave to the provisions of the Smritis in the light of the needs of the changing society, made their commentaries acceptable to the people and enforceable by the king. Asahaya who wrote the commentary on Naradasmriti was the pioneer in

https://www.pyqonline.com

this direction. Thereafter a large number of commentators took up such work which brought into existence the most merited commentaries which have been dwelt upon earlier. The last of such commentaries was Viramitrodaya of Mitra Misra. These commentators did not consider themselves bound by the orthodox views and were free from prejudices. They struck a balance between the age-old constraints of the orthodox view and the growing needs of modern progressive society."

Question No. 2: (10 Marks)

Translate the following passage in English.

नीचे दिये गये लेखांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजियेः–

"यहां आने से पहले, जब मैं चीजों के बारे में उस तरह से नहीं सोचती थी, जिस तरह से अब सोचती हूं, तो मैं अक्सर महसूस किया करती थी कि मम्मी, पापा और मार्गोट से मेरा कोई नाता नहीं है और हमेशा बाहरी व्यक्ति ही बनी रहूंगी । कई बार तो छः–छः महीने तक मुझे यही लगता रहता कि मैं अनाथ हूं । तब मैं खुद को सचमुच अनाथ की भूमिका में देखने लगती, जब मैं सचमुच अपने–आपको ऐसा समझने के लिए बुरी तरह कोसती । इसके बाद मैं जबरदस्ती दोस्ती का भाव लाने की कोशिश करती । हर सुबह जब मैं सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनती, मैं उम्मीद करती कि ये मम्मी होंगी । वे आते ही गुड मार्निंग कहेंगी । मैं उनसे लाड़ लड़ाते हुए नमस्ते करूंगी । इसकी वजह यह थी कि मैं उनकी निगाह में स्नेह छलछलाता देखना चाहती थी। लेकिन होता ये था कि वे किसी न किसी बात का बतंगड़ बनाकर मुझे फटकार देतीं और जब मैं स्कूल के लिए निकलती तो पूरी तरह से हताश और निराश होती । स्कूल से वापिस आते समय भी मैं यही सोचते हुए लौटती कि चलो जाने दो । मम्मी बेचारी को भी तो कितनी समस्याऐं और चिंतायें हैं । मैं घर पर बहुत अच्छे मूड में आती, दुनिया भर की बक–बक की पिटारी लिये, लेकिन सुबह की घटनायें एक बार फिर से होने लगतीं और मैं जब कमरे से निकलती तो मेरे एक हाथ में मेरा बस्ता होता और चेहरे पर हवाइयां उड़ रही होतीं। चेहरा लटकता रहता । कई बार मैं तय करती कि मैं यूं ही रूठी ही रहूंगी लेकिन मेरे पास बताने के लिए स्कूल की इतनी सारी बातें होती कि मैं अपना निश्चय भूल जाती और मम्मी जो कुछ भी कर रही होतीं–उन्हें रोकने को कहती और मेरी बात ध्यान से सुनने पर मजबूर करती । तब एक बार फिर वह समय आता जब मैं सीढ़ियों पर कदमों की आहट न सुनना चाहती ओर हर रात तकिये में सिर छुपाए रोती रहती ।

यहां सारी चीजें बद से बदतर होती चली गयी हैं । तुम्हें तो सब कुछ पता ही है, ईश्वर मुझ पर मेहरबान हुआ है और किसी को मेरे लिए भेज दिया है, मैं अपना पैंडेंट सहलाती हूं, उसे अपने होंठों के पास लाती हूं और सोचती हूं, 'मुझे क्या परवाह, पीटर मेरा है और यह बात किसी को भी पता नहीं', इस बात को ध्यान में रखकर मैं किसी भी फतवे या ऊल–जुलूल टिप्पणी का मुकाबला कर सकती हूं, यहां कौन इस बात का शक कर सकेगा कि इस बित्ते भर की छोकरी के दिमाग में क्या चल रहा है ?"

https://www.pyqonline.com

Question No. 3: **(10 Marks)**

(Q.no. 3 is in two parts, each carry 05 marks)

(A) Translate the following passage in Hindi :- **(5 Marks)**

नीचे दिये गये लेखांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिएः—

"Assignment can be done by the owner of the copyright in an existing work. Section 18 permits assignment by a prospective owner, i.e., a person who is not the first owner as defined in section 17, in a future work. However, as per the proviso, parties can enter into an agreement for assignment of copyright in any future work, but the assignment itself takes place only after "the work" comes into existence and not before. Section 18 therefore gives right to a person, who is not the owner of copyright within the meaning of the Act to assign his rights in any future work which will come into existence in future by a contract of assignment. Though an agreement for assignment of a future work is permitted by section 18 of the Act but the same is subject to the condition that the assignment itself will take effect and come into operation only after the work has come into existence. Before the work comes into existence the assignment does not have any effect. This is necessarily a corollary and flows from the object and purpose of law of copyright which is to protect the final expression and not an idea."

(B) Translate the following passage in English:- **(05 Marks)**

नीचे दिये गये लेखांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजियेः—

"लगभग एक दशक पहले तक, भारतीय सिर्फ घरों और वाहनों के लिए ही ईएमआई के विकल्प के बारे में सोचा करते थे, लेकिन पिछले पांच साल में उभरती खुदरा अर्थव्यवस्था में भी ईएमआई की पैठ देखी गई है। उपभोक्ता गहने, स्मार्टफोन, लक्जरी हैंडबैग, एयर टिकट, फर्नीचर और ऐसी ही अन्य खरीददारियों के लिए ईएमआई का विकल्प चुन रहे हैं । आपको जो चीज चाहिए, आप उसे खरीदते हैं । और अगर आप इसे खरीदने में सक्षम नहीं हैं तो कोई न कोई एनबीएफसी कम्पनी बैठी है आपकी चाहत पूरी करने के लिए। आप अपनी पसंद की चीज खरीद लीजिए और उसकी एवज में कुछ सौ रूपए से लेकर कुछ हजार की ईएमआई की शक्ल में भुगतान करते जाइये। एनबीएफसी वित्त पोषण से पहले आपके केडिट

https://www.pyqonline.com

स्कोर या ऐसी ही किसी अन्य चीजों को लेकर बहुत सख्त नहीं होते हैं । वे बैंको की तरह सख्त भी नहीं है। वे उन चीजों के लिए उधार देते हैं जिसके लिए कोई बैंकिंग संस्थान कभी नहीं देना चाहेगा । वे अधिक जोखिम लेते हैं और कभी-कभी खराब निवेश के निर्णय भी। लेकिन वे छोटे कारोबार-छोटे ट्रांसपोर्टर से लेकर छोटे व्यापारियों या फिर ग्रामीण इलाकों में सड़क बना रहे एक ठेकेदार तक- को पैसा मुहैया कराते हैं और भारत की अर्थव्यवस्था इन्हीं छोटे व्यवसायों से ही फलती-फूलती है ।"

Question No. 4 **(10 Marks)**

Write the precis of the following passage in English:-

नीचे दिये गये लेखांश का अंग्रेजी में सार लिखिएः-

"Custom is also an important source of law and it is desirable to define the same. According to Salmond, custom is the embodiment of those principles which have commended themselves to the national conscience as principles of justice and public utility. According to Keeton, customary law may be defined as those rules of human action, established by usage and regarded as legally binding by those to whom the rules are applicable, which are adopted by the courts and applied as sources of law because they are generally followed by the political society as a whole or by some part of it. According to Carter: "The simplest definition of custom is that it is the uniformity of conduct of all persons under like circumstances."

According to Holland, custom is a generally observed course of conduct. The best illustration of the formation of such habitual courses of action is the mode in which a path is formed across a common: one man crosses the common in the direction which is suggested either by the purpose he has in view or by mere accident. If others follow in the same track - which they are likely to do after it has once been trodden - a path is made. According to Austin, custom is a rule of conduct which the governed observe spontaneously and not in pursuance of law settled by a political superior. According to Allen, custom as a legal and social phenomenon grows up by forces inherent in society, forces partly of reason and necessity and partly of suggestion and limitation.

According to Halsbury, a custom is a particular rule which has existed either actually or presumptively from time immemorial and has obtained the force of law in a particular locality, although contrary to or not consistent with the general common law of the realm. The Judicial Committee of the

https://www.pyqonline.com

Privy Council has defined custom as a rule which in a particular family or in a particular district has from long usage obtained the force of law.

Custom is the oldest form of law-making. A study of ancient law shows that in primitive society, the lives of the people were regulated by customs which developed spontaneously according to circumstances. It was felt that a particular way of doing things was more convenient than others.

When the same thing was done again and again in a particular way, it assumed the form of custom. Holland rightly points out that custom originated in the conscious choice by the people of the more convenient of the two acts. Imitation also must have played an important part in the growth of customs." https://www.pyqonline.com

Question No.5: (10 Marks)

Write the precis of the following passage in Hindi:-

नीचे दिये गये लेखांश का हिन्दी में सार लिखिएः–

"क्या यह एक जादू था ? परंतु हम जानते हैं कि दुनिया में जादू नाम की कोई चीज नहीं है। इस प्रयोग में जादूगर का काम रसायन कर रहा था। कोबाल्ट क्लोराईड का विलयन, जिसमें थोड़ा सा निकैल या लौह क्लोराईड मिला हुआ होता है, साधारण ताप पर रंगहीन होता है । परंतु इससे कोई ड्राइंग बनाकर सूखने के बाद अगर उसे थोड़ा–सा भी गर्म किया जाये तो यह घोल अतिसुंदर हरे रंग में बदल जाता है । पारासेल्स इसी विलयन की सहायता से जादूई तस्वीर दिखा रहे थे । एक निश्चित् समय पर वे दर्शकों की निगाह से छिपाकर तस्वीर की दूसरी ओर रखी एक मोमबत्ती जला देते थे जिसके फलस्वरूप लोगों के देखते–देखते मौसम बदल जाता था।

यह बात जरूर सच है कि पारासेल्स को खुद भी अपने रंगों की रसायनिक संरचना मालूम नहीं थी क्योंकि उन दिनों विज्ञान जगत कोबाल्ट और निकैल दोनों ही धातुओं से बिल्कुल अपरिचित था। हालांकि कोबाल्ट यौगिक कई शताब्दियों से रंजकों के रूप में प्रयोग हो रहे थे। 5000 साल पहले चीनी मिट्टी तथा कांच के उत्पादन में नीले रंग का कोबाल्ट रंजक प्रयुक्त किया जाता था । उन दिनों चीन के लोग सारे विश्व में प्रसिद्ध अपनी नीली चीनी मिट्टी के उत्पादन में कोबाल्ट इस्तेमाल करते थे । प्राचीन मिस्र के लोग मिट्टी के घड़ों पर नीले रंग की पालिश करते थे जिसमें कोबाल्ट मिला होता था । पुरातत्वज्ञों को फिराउन टूटनखमोन की कब्र में नीले रंग के कांच मिले हैं जो इस तत्व के लवणों से रंगे हुए हैं । प्राचीन आसीरी तथा बाबिलन के स्थान में भी पुरातत्वज्ञों को खुदाई करने पर ऐसे कांच मिले हैं ।

ऐसा लगता है कि हमारे युग के आरंभ में कोबाल्ट रंजकों का रहस्य खो गया क्योंकि विजान्ती, यूनान, रोम तथा अन्य देशों के कारीगरों ने उन दिनों जितना भी नीला कांच बनाया

https://www.pyqonline.com

उस में कोबाल्ट बिल्कुल नहीं था । उन्होंने नीला रंजक बनाने के लिये ताम्र का प्रयोग किया । उनका नीला रंग स्पष्टतया प्राचीन रंग से घटिया था ।

कांच और कोबाल्ट की जादूई काफी लंबी रही । केवल मध्य युग में वेनिस के कारीगरों ने अद्भुत नीले कांच का उत्पादन फिर शुरू किया । ऐसे कांच की प्रसिद्धि कोबाल्ट के उपयोग से संबंधित थी ।

वेनिस के लोगों ने इस लाजवाब कांच के बनाने का फार्मूला गुप्त रखा । कहीं यह रहस्य खुल न जाये, इस खयाल से तेरहवीं शताब्दी में वेनिस सरकार ने कांच की सारी फैक्टरियां एक छोटे से द्वीप मुरानों पर स्थानान्तरित कर दी। किसी भी बाहरी व्यक्ति को इस द्वीप पर जाने की आज्ञा नहीं थी । इसके साथ–साथ कोई भी कारीगर अधिकारियों की आज्ञा के बिना द्वीप से बाहर नहीं जा सकता था । परंतु पता नहीं कैसे एक शिक्षार्थी जार्जियों बेलेरिनों को वहां से निकलने में सफलता मिल गयी । वह जर्मनी पहुंच गया और वहां एक शहर में उसने कांच की एक कर्मशाला खोल ली । परंतु यह कर्मशाला ज्यादा दिनों तक नहीं खुली रही । एक दिन उसमें 'आग लग गई' और वह स्वाहा हो गया। कर्मशाला का भगोड़ा मालिक भी कटार से मरा पाया गया।

सत्तरहवीं शताब्दी की दस्तावेजें यह बताती हैं कि उन दिनों रूस में एक महंगे परंतु स्थायी तथा गाढ़े कोबाल्ट रंजक 'गोलुबेत्स' (रूसी भाषा में गोलुबोई का अर्थ होता है–नीला) की बहुत मांग थी। क्रेमलिन के आमोद–प्रमोद भवन, शस्त्रागार, अर्खान्गेल और उस्पेन्ये कैथीड्रल की दीवारें तथा उस जमाने की बहुत सारी अद्वितीय इमारतें इसी रंजक से सजायी गयी हैं।

कोबाल्ट रंजकों के महंगा होने का कारण यह था कि इस धातु के अयस्क बहुत कम मात्रा में प्राप्त किये जाते थे । असल में बात यह थी कि उन दिनों औद्योगिक जगत कोबाल्ट अयस्कों के बारे में कोई जानकारी ही नहीं रखता था क्योंकि इस धातु के बड़े निक्षेप प्रकृति में उपस्थित ही नहीं हैं । यह केवल कुछ धातुओं के थोड़े–थोड़े सम्मिश्रों के रूप में मिलता है जैसे आर्सेनिक, ताम्र, बिस्मथ आदि। यही वजह थी कि मध्य युग में सैक्सोनी पहाड़ों के खनिकों को इस बात की भनक तक नही थी कि उनके पहाड़ों में एक अज्ञात धातु छिपी हुई है ।

परन्तु समय–समय पर यहां के लोगों को एक विचित्र अयस्क मिलता रहा जिसके बाह्य गुण रजत अयस्क से मिलते जुलते थे । उन्होंने इससे रजत प्राप्त करने की काफी कोशिश की परंतु सफलता नहीं मिली । इसके अलावा एक बात और भी थी और वह यह कि भर्जन के दौरान अयस्क में से जहरीली गैसें निकलती थीं जिनसे खनिकों को बहुत परेशानी होती थी। धीरे–धीरे सैक्सोनी के लोगों को वास्तविक रजत तथा नकली रजत में फर्क पता चल गया। उन्होंने इसका नाम "कोबाल्ट" रखने का फैसला किया । यह नाम इसके अंदर "घुसी" पहाड़ी आत्मा के नाम पर रखा गया था ।"

****

https://www.pyqonline.com